तेरे मन का उपवन क्यूँ इतना सुना पड़ा है
देहभान के पाश में तूँ इतना क्यूँ जकड़ा है
क्या तुझको नहीं मिली तेरी सत्य पहचान
दुनिया में तूँ आया है बनकर सिर्फ मेहमान
अब ना समझना खुद को यहाँ का वासी
तूँ तो है उस ब्रह्मलोक परम धाम का वासी
ये सारा मनुष्य लोक नाट्यमंच कहलाता है
हर कोई यहाँ पर अपना पार्ट बजाने आता है
हर कोई यहाँ भिन्न भिन्न नाम रूप वाला है
अपने अपने स्थान पर सबका पार्ट निराला है
देख नहीं तूँ और किसी को बस पार्ट सुधार
श्रेष्ठ जीवन बनाने का बस एक यही आधार
कर ले इरादा मन में खुद को श्रेष्ठ बनाने का
सम्पूर्ण पावन बनकर नई दुनिया में आने का
ये दुनिया तो मिटनी है इसका आकर्षण छोड़
अपनी मन बुद्धि को इक शिव बाबा से जोड़
दुखहर्ता सुखकर्ता एक शिवबाबा कहलाता है
हम बच्चों के लिए वो स्वर्ग हथेली पर लाता है
ॐ शांति